लीलाधर जगूड़ी

मैं अकेला नहीं हूँ

क्या कोई छेद खिड़की नहीं हो सकता
कि ज्वाला भीतर आ सके ?

क्या कोई छेद दरवाज़ा नहीं हो सकता
कि अँधेरा बाहर जा सके ?

अब मैं अकेला नहीं हूँ
तुम्हारे अन्धे प्रहार के इन्तज़ार में
– विस्फोट के लिए जो ज़रूरी है ।

बची हुई पृथ्वी
Delhi, Rajkamal, (1977) 1994:57